जलवायु प्रतिरोधी रणनीतियों और उपायों के माध्यम से हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा विषय पर आयोजित
तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट
(दिसंबर 10-12, 2025)

भा.वा.अ.शि.प.- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला में दिनांक 10–12 दिसम्बर, 2025 तक **'जलवायु प्रतिरोधी रणनीतियों और उपायों के माध्यम से हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा'** विषय तीन दिवसीय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश और केंद्र शासित प्रदेश जम्मू व कश्मीर के विभिन्न विभागो जैसे कृषि विभाग, उद्यान विभाग, वन विभाग, पशु पालन विभाग इत्यादि के अधिकारियों एवं स्थानीय निकयाओं के प्रतिनिधि, प्रगतिशील किसान और गैर सरकारी संगठनो के सदस्यों सहित कुल 24 प्रतिभागियों ने भाग लिया। **डॉ. संजय सूद, प्रधान मुख्य अरण्यपाल (वन बल प्रमुख), हिमाचल प्रदेश वन विभाग** ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में की शोभा बढ़ाई और **सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर सस्टेनेबल लैंड डेवलपमेंट (सी.ओई-एस.एल.एम),** देहरादून के निदेशक **डॉ.राजेश शर्मा** बतौर बिशेष अतिथि शामिल हुये।

उद्घाटन सत्र (10.12.2025)

आरंभ में, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की निदेशक **डॉ. मनीषा थपलियाल** ने मुख्य अतिथि और सभी प्रतिभागियों का हार्दिक अभिनंदन किया। उन्होंने संस्थान की अनुसंधान एवं विस्तार गतिविधियों के बारे संक्षेप में प्रतिभागियों को अवगत करवाया और कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन **सीओई-एसएलएम,**देहरादून के सहयोग से किया जा रहा है। उन्होने जानकारी प्रदान करते हुये कहा कि माननीय प्रधानमंत्री द्वारा वर्ष 2019 में आयोजित यू.एन.सी.सी.डी सम्मेलन के 14वें सत्र में भूमि क्षरण संबंधी मुद्दों पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने और प्रौद्योगिकी के समावेश के उद्देशय से **सैंटर ऑफ एक्सलेन्स ऑन सस्सटेनबल लैंड मैनेजमेंट (सीओई-एसएलएम)** की स्थापना की घोषणा गई और वर्तमान में यह केंद्रीय स्तर पर प्रमुख नोडल एजेंसी है जो भूमि क्षरण की समस्याओं के उचित समाधान और भूमि संसाधनों के सतत प्रबंधन के प्रयासों के समन्वयन्न के लिए काम कर रही है। है। इसके अतिरिक्त, अपने सम्बोधन में उन्होंने हिमालय के परिस्थितिकीय, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डाला और जलवायु परिवर्तन के कारण से इसके संवेदनशील वातावरण को होने वाले खतरों को भी उजागर किया और कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों के हितधारकों में हिमालयन पारिस्थितिकी तंत्र के लिए आसन्न चुनौतियों के बारे में गहन समझ विकसित करना, समस्यों का विश्लेषण और समाधान, और प्राकृतिक संपदा के संरक्षण के लिए बेहतर तालमेल विकसित करना है।

इसके बाद, प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक **डॉ. आर के वर्मा** ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूप रेखा और तीन दिवसीय कार्यक्रम का विस्तृत विवरण सांझा किया। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण मॉड्यूल में हिमालयन पारिस्थितिकी तंत्र के विभिन्न पहलुओं जैसे जैव विविधता एवं संरक्षण, पर्वतीय भू-भागों में जलवायु परिवर्तन की प्रभावों, प्रोद्योगिकी द्वारा संसाधन प्रबंधन, कृषि वानिकी प्रणालियाँ, समन्वित जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन, मिट्टी और जल संरक्षण के उपायों और आजीविका अर्जन विकल्पों की जानकारी का समावेश किया गया है। उन्होंने आगे कहा कार्यक्रम के विभिन्न तकनीकी सत्रों में प्रतिष्ठित संस्थानों जैसे कि बागवानी और वानिकी विश्वविद्यालय,सोलन, आई.सी.ए.आर-भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण परिषद, और हिमालयी अनुसंधान समूह (एच.आर.जी) आदि के वैज्ञानिकों/शिक्षाविदों और पेशेवर व्यापक ज्ञान और अनुभव साझा करेंगे। इसके अतिरिक्त, हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा के लिए प्रभावी विधियों के बारे में व्यवहारिक जानकारी प्रदान करने के उद्देशय से एक दिन का एक्सपोजर विजिट भी निर्धारित किया गया है ।

तत्पश्चात, **डॉ. राजेश शर्मा,** निदेशक सीओई-एसएलएम,ने प्रतिभागियों को संबोधित किया और प्रशिक्षण कार्यक्रम की विषय वस्तु/ थीम को स्पष्ट करते हुए कहा कि यह क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य के अनुरूप है। और इसका मौलिक उद्देश्य विभागों/हितधारकों के बीच में हिमालयन पारिस्थितिक तंत्रों की सुरक्षा के लिए बेहतर समन्वय स्थापित करना है। उन्होने क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तरों पर जलवायु परिवर्तन और बढ़ते तापमान के दुष्प्रभावों तथा विशेष रूप से हिमालय के संदर्भ में, पारिस्थितिक क्षरण, जैव विविधता ह्रास, मौसम पैटर्न में बदलाव, जल संकट, भूस्खलन इत्यादि आपदाओं पर गंभीर चिंता व्यक्त की। उन्होंने जानकारी सांझा करते हुये कहा कि **सीओई-एसएलएम,** भारतीय वानिकी अनुसंधान संस्थान एवं शिक्षा परिषद के अन्य संस्थानों में – मैंग्रोव और तटीय पारिस्थितिकी तंत्रों के पुनर्स्थापन एवं प्रबंधन, शुष्क भूमि क्षेत्रों के लिए एकीकृत मृदा एवं जल संरक्षण रणनीतियाँ और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के प्रबंधन के लिए प्रकृति-आधारित समाधान जैसे अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन के लिए सहयोग प्रदान कर रहा है। अपने सम्बोधन में, डॉ. राजेश ने प्राकृतिक संसाधनो और पारितंत्रों की सुरक्षा के लिए विभिन्न विभागों द्वारा उपलब्ध जनकारियों / आंकड़ों को साझा करने की आवश्यकता व्यक्त की।

अध्यक्षीय भाषण में, **डॉ. संजय सूद** ने हिमालय के बहुआयामी महत्व, वानस्पतिक सम्पदा, दुर्लभ व स्थानिक प्रजातियों और पारिस्थितिक सेवाओं के बारे विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने कहा कि हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र एशिया की लगभग एक अरब आबादी की आजीविका का आधार है। उन्होने इस क्षेत्र में तेजी से हो रही विकासात्मक गतिविधियां और संवेदन पारिस्थिकी के बीच संतुलन स्थापित करने पर बल दिया। डॉ. संजय सूद ने हिमालय के परिप्रेक्ष् में,विभिन्न विभागों के प्रतिभागियों और समाज के अन्य हितधारकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन पर हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान और सीओई-एसएलएम की सराहना की। उन्होंने कहा कि तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्राप्त ज्ञान निश्चित रूप से इस क्षेत्र से जुड़े हितधारकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा ।

तकनीकी सत्र (10.12.25):

प्रथम दिन के तकनीकी सत्र में, सबसे पहले सीओई-एसएलएम के वैज्ञानिक **डॉ. संजय सिंह** ने लैंड डीग्रडेशन न्यूट्रेलिटी (एलडीएन) के लिए कारगर उपायों पर केन्द्रित ऑनलाइन प्रस्तुतीकरण दिया। अपनी प्रस्तुति में, उन्होंने भूमि क्षरण की अवधारणा, सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के साथ इसके संबंध और इस दिशा में सीओईएसएलएम द्वारा की गई विभिन्न पहलों/गतिविधियों पर विस्तार से व्यख्या की तथा लैंड डीग्रडेशन न्यूट्रेलिटी के सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय सह-लाभों, जैसे कृषि उत्पादकता में वृद्धि, जैव विविधता में सुधार और कार्बन पृथक्करण, जलवायु परिवर्तन अनुकूलन को गहनतापूर्वक समझाया। अपने व्यखायान में, विषय विशेषज्ञ खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और सशक्त पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के लिए लैंड डीग्रडेशन न्यूट्रेलिटी (एलडीएन) को एक महत्वपूर्ण मार्ग बताते हुए, इसके के लिए नवीन वित्तपोषण रणनीतियों, एकीकृत नीतिगत ढाँचों तथा प्रभावी निगरानी उपकरणों को बढ़वा देने के जरूरत को रेखांकित किया।

इसके उपरांत, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के सेवानिवृत्त वैज्ञानिक **डॉ. वनीत जिष्टू** हिमालय की बहुरूपदर्शी जैव विविधता, वनस्पतियों का वितरण और विविध पारिस्थितिक सेवाओं के बारे में रोचक और ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया। उन्होंने हिमलाय क्षेत्र के वनस्पतियों के आकलन से संबंधित अनुसंधान आवश्यकतावों प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त, डॉ. जिष्टू ने प्रतिभागियों को हिमालय में पाई जाने वाली विभिन्न स्थानिक प्रजातियों के औषधीय महत्व से अवगत कराया और स्थानिक प्रजातियों के वृक्षारोपण की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होने प्रतिभागियों को बताया कि शिमला के पॉटर हिल में पश्चिमी हिमालयी शीतोष्ण वृक्ष उद्यान विकसित किया गया है, जिसका उद्देश्य स्थानिक/लुप्तप्राय प्रजातियों, शीतोष्ण क्षेत्र कि वृक्ष प्रजातियों का संरक्षण करना है। डॉ. जिष्टू ने कहा कि उत्तर-पश्चिमी हिमालय क्षेत्र के अन्य भागों में भी महत्वपूर्ण पादप विविधता के संरक्षण के लिए इस तरह की पहल की जा सकती है।

इसके क्रम में, **डॉ. एस.एस. रंधावा,** प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी (सेवानिवृत्त), हिमाचल प्रदेश विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण परिषद (हिमकोस्ट) द्वारा पर्वतीय क्षेत्रों में संसाधन प्रबंधन में रिमोट सेंसिंग और जीआईएस की भूमिका के बारे में प्रस्तुति दी। डॉ.एस.एस. रंधावा ने हिमनदों के पिघलने, भूस्खलन, अनियमित वर्षा वायु और जलवायु परिवर्तन के विविध प्रभवों के बारे में भी विस्तारपूर्वक जानकारी सांझा की। तकनीकी सत्र के अंत में **श्री दिनेश पाल,** वन मंडलाधिकारी (मुख्यालय), हिमाचल प्रदेश वन विभाग ने हिमालयी पारिस्थितिक तंत्रों के सुरक्षा के लिए विभिन्न संस्थागत और नीतिगत उपायों पर जानकारी प्रदान की और प्रतिभागियों का ज्ञानवर्धन किया। अपने व्याख्यान में, उन्होंने हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा /संरक्षण के आधुनिक और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के समावेश की भूमका को उजागर किया।

क्षेत्रीय भ्रमण (11.12.25)

प्रशिक्षण की रूपरेखा के अनुसार कार्यक्रम का दूसरा दिन में क्षेत्रीय भ्रमण के लिए निर्धारित था। जिसका मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को हिमालयी क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन/संरक्षण की तकनीकों और आजीविका अर्जनक के विकल्पों पर व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना था। इसके अंतर्गत, सभी प्रशिक्षुओं ने **डॉ.आर.के.वर्मा**, प्रशिक्षण समन्वयक, के समन्वयन्न में कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके),कंडाघाट और बागवानी

एवं वानिकी विश्वविद्यालय(यूएचएफ),नौणी का क्षेत्रीय भ्रमण किया। सबसे पहले, प्रतिभागियों ने कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), कंडाघाट का दौरा किया। **डॉ. सीमा ठाकुर**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने प्रतिभागियों को कृषि विज्ञान केंद्र की गतिविधियों से अवगत कराया और क्लोनल रूटस्टॉ तथा गुठलीदार फलों की नई उन्नत प्रजातियों व उत्पादक क्षमताओं के बारे में पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से जानकारी प्रदान की। इसके बाद, प्रतिभागी, बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय(यूएचएफ),नौणी गए। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों /विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों को प्रभावी भूमि उपयोग के लिए प्रगतिशील हस्तक्षेप।, विभिन्न कृषि-वानिकी मॉडल, जलवायु परिवर्तन के अनुकूल रणनीतियों, मृदा और जल संरक्षण के लिए चलायी जा रही अनुसंधान गतिविधियों के बारे में व्यावहारिक ज्ञान सांझा किया। यूएचएफ सोलन की वैज्ञानिक **डॉ. मीनाक्षी बसोली** ने मध्य पहाड़ी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त फूलों और ऑर्किड की प्रजातियों की कृषि पद्धतियों की जानकारी प्रदान की तथा **डॉ. घनश्याम अग्रवाल** हाइड्रोपोनिक्स और प्रिसीजन फ़ार्मिंग प्रणाली के बारे में प्रतिभागियों का ज्ञानवर्धन किया। इसके अतिरिक्त प्रतिभागियों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्मों, ग्रीन हाउस व पॉली टनल में अनुसंधान परीक्षणों का अवलोकन किया।

तकनीकी सत्र (12.12.25):

प्रशिक्षण कार्यक्रम के तीसरे दिन के तकनीकी सत्र में, सबसे **डॉ. लाल सिंह**, निदेशक, हिमालयन रिसर्च ग्रुप ने पारिस्थितिकी तंत्रों के सामाजिक-आर्थिक लाभों, पर्वतीय कृषि जैव विविधता, पोषण एवं आजीविका सुरक्षा उपायों तथा नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग के लिए अनुकूलित समाधान पर व्याख्यान दिया। उन्होंने, कृषि अवशेष से साइलेज बनाने और मशरूम की खेती बारे में तकनीकी ज्ञान को सांझा किया। डॉ. लाल सिंह ने हिमालयन पारिस्थितिक तंत्रों के लिए समुदाय-आधारित मॉडलों को विकसित करने पर विशेष बल दिया।

इसी प्रकार, **डॉ.डी.आर.भारद्वाज**,प्रोफेसर, कॉलेज ऑफ फॉरेस्ट्री,यूएचएफ,नौणी ने उत्तर-पश्चिमी हिमालय के ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए कारगर कृषि-वानिकी प्रणालियों पर एक व्याख्यान दिया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास के बीच संतुलन स्थापित करने में कृषि-वानिकी की भूमिका और इससे जुड़े कई लाभों से अवगत किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि किस प्रकार कृषि वानिकी मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार, दीर्घकालिक कृषि उत्पादकता, कार्बन पृथक्करण को बढ़ाने और जैव विविधता संरक्षण में योगदान देती है। इसके अतिरिक्त, डॉ. भारद्वाज ने हिमालय के भिन्न भिन्न क्षेत्रों में कृषि-वानिकी की उपयुक्त पौध प्रजातियों के बारे में महत्वपूर्ण और उपयोगी जाजानकारी प्रतिभागियों को प्रदान की।

इसके बाद, आईसीएआर-मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान चंडीगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक **डॉ. पंकज पंवार**, ने हिमालय के एग्रो-क्लाईमैटिक क्षेत्रों अनुरूप मृदा एवं जल संरक्षण की वैज्ञानिक विधियों पर जानकारीपूर्ण व्याख्यान दिया। उन्होंने विशेष रूप से ढलान स्थिरीकरण, मृदा अपरदन रोकने, भू-जल पुनर्भरण को बढ़ाने के कंटूर ट्रेंचिंग, चेक डैम और दूसरे वानस्पतिक उपायों पर व्यापक जानकारी सांझा की ।

सत्र के अंत में, **श्री संजीव ठाकुर**, उप वन संरक्षक (डीसीएफ) ने हिमाचल प्रदेश में एकीकृत विकास परियोजना (आईडीपी) के अंतर्गत क्रियान्वित विविध गतिबिधियों , पहाड़ी क्षेत्रों में एकीकृत वॉटरशेड प्रबंधन, प्रमुख घटकों, पारिस्थितिक संतुलन व जल संरक्षण/ उपलब्धता में सामुदायिक भागीदारी/ समाजस्य के महत्व पर अपने अनुभवो व ज्ञान को प्रतिभागियों से सांझा किया ।

समापन सत्र

प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन सत्र की अध्यक्षता संस्थान की निदेशक **डॉ. मनीषा थपलियाल ने** की। प्रतिभागियों को संबोधित करते हुये, उन्होने हिमालयन क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन का अधिक गंभीर प्रभाव के मद्देनज़र संवेदनशील पारिस्थितिकी की सुरक्षा के लिए एकीकृत दृष्टिकोण आधारित समग्र कार्ययोजना अपनाने के लिए कहा। उन्होंने प्रतिभागियों से प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्राप्त ज्ञान और अनुभवों को जमीनी स्तर पर लागू कर हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र के सुरक्षा/ संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान देने का आग्रह किया। उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी के लिए सराहना विकत की तथा उनके द्वारा से प्राप्त सकारात्मक लाभों का आकलन किया। सभी प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में सकारात्मक राय व्यक्त की और विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा साझा किए गए ज्ञान पर संतोष व्यक्त किया। प्रतिभागियों ने कहा कि तकनीकी सत्रों में, इंटरैक्टिव सैशन के दौरान, वैज्ञानिकों और विषय- विषयज्ञों से व्यापक चर्चा की गई, प्रश्न पूछे और अपने-अपने क्षेत्रों में व्यावहारिक ज्ञान पर विचारों का आदान-प्रदान किया। अंत में, भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की निदेशक ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। उन्होंने तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए प्रशिक्षण समन्वयक और वन पारिस्थितिकी एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग के कर्मचारियों द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। श्रीमती शिल्पा, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया और समापन सत्र के अंत में धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया गया।

.....

झलकियाँ .....

nment Panel on Climate Change)
Nation Framework Convention on Climate
Central Pollution control Board,
onment Foundation of India

UMESH BHAVAN

crops or livestock, can overcome
diversity, and enhancing climate
हि.व.अ.सं.
HFRI

हि.व.अ.सं.
HFRI

HPIDP – A PREVIEW
PROJECT DEVELOPMENT OBJECTIVE

पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा"

रणनीतियों और उपायों के माध्यम से
पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा"

MEDIA COVERAGE

पंथाघाटी में हिमालय सुरक्षा पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (एचएफआरआई) पंथाघाटी में बुधवार को जलवायु प्रतिरोधी रणनीतियों और उपायों के माध्यम से हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हुआ। यह प्रशिक्षण भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर सस्टेनेबल लैंड मैनेजमेंट के आयोजित किया गया। कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश और जम्मू–कश्मीर के वन विभाग, कृषि विभाग, उद्यान विभाग, पशुपालन विभाग, स्थानीय निकायों, ग्राम विकास समितियों तथा गैर-सरकारी संगठनों के 24 अधिकारी शामिल हुए। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि हिमाचल प्रदेश वन विभाग के प्रधान मुख्य अरण्यपाल डॉ. संजय सूद भी उपस्थित रहे। विशेष अतिथि के रूप में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर सस्टेनेबल लैंड मैनेजमेंट, देहरादून के निदेशक डॉ. राजेश शर्मा शामिल हुए। संस्थान की निदेशक डॉ. मनीषा थपलियाल ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आरके वर्मा, डॉ. संजय सिंह, डॉ. वनीत जिष्टू, डॉ. एसएस रंधावा और डीसीएफ दिनेश पॉल मौजूद रहे। संवाद

अमर उजाला

दैनिक भास्कर

हिमाचल 13-12-2025

भास्कर खास | हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने जताई चिंता

प्रदेश में अनियमित वर्षा और मानव हस्तक्षेप से बढ़ रहा भूमि कटाव, हिमालयी क्षेत्र के लिए यह चेतावनी की घंटी

पूनम भारद्वाज | शिमला

हिमाचल सहित पूरे देश में अनियमित वर्षा, जलवायु परिवर्तन और बढ़ता मानव हस्तक्षेप भूमि कटाव का सबसे बड़ा कारण बनते जा रहे हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि इन तीनों कारकों का संयुक्त प्रभाव हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र पर गंभीर खतरा पैदा कर रहा है और यह चिंता का विषय है। इस देश और प्रदेश की उपजाऊ भूमि नष्ट हो रही है जो प्रदेश में आने वाले समय के लिए खाद्य संकट का बड़ा कारण बन सकती है। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, चंडीगढ़ के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. पंकज पंवार ने चेताते हुए कहा कि भारत में प्रति हैक्टेयर 16 टन मिट्टी हर साल कटाव की भेंट चढ़ रही है। जलवायु परिवर्तन के कारण बारिश का पैटर्न पूरी तरह बदल चुका है। एक ओर लंबा ड्राई स्पेल, दूसरी ओर अचानक भारी बारिश मिट्टी को बहा ले जाती है। डॉ. पंवार ने बताया कि देश में 68 फीसदी मिट्टी का कटाव पानी के तेज बहाव से होता है, और यह स्थिति अनियमित वर्षा के कारण तेजी से बिगड़ रही है। उन्होंने कहा, जब पानी नियंत्रित तरीके से नहीं बहता, तो मिट्टी अपनी जगह पर नहीं टिकती। नतीजतन खेतों की उर्वरक क्षमता घटती है और दूसरी तरफ निचले क्षेत्रों में उपजाऊ मिट्टी जमा होकर भूमि को नुकसान पहुंचाती है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिमाचल और जम्मू–कश्मीर के विभिन्न विभागों के अधिकारी, स्थानीय निकायों के प्रतिनिधि और स्वयंसेवी संस्थाओं के सदस्य शामिल हुए और उन्होंने हिमालयी पर्यावरण की सुरक्षा पर अपने सुझाव साझा किए।

तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेते प्रतिभागी।

अवैज्ञानिक गतिविधियां मिट्टी को कमजोर बना रही

उन्होंने बताया कि तेजी से हो रहा निर्माण, जंगलों की कटाई और ढलानों पर अवैज्ञानिक गतिविधियां मिट्टी को कमजोर बना रही हैं। यही मानवजनित हस्तक्षेप जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को और बढ़ा देता है। उन्होंने समाधान बताते हुए कहा कि कंटूर ट्रैंचिंग, चेक डैम, ढलानों पर घास व झाड़ियों का रोपण जैसे उपायों को बेहद प्रभावी बताया, जो पानी की रफ्तार कम करके मिट्टी को बहने से रोकते हैं। नौणी विश्वविद्यालय के डॉ डीआर भारद्वाज ने भी कहा कि जंगलों में लगने वाली मानवजनित आग मिट्टी की गुणवत्ता बिगाड़ती है और कटाव को कई गुना बढ़ा देती है।

दैनिक भास्कर

जलवायु परिवर्तन के जोखिमों पर डाला प्रकाश

शिमला। हिमालयी पारितंत्र को जलवायु परिवर्तन से बचाने के उद्देश्य से हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला में 10 से 12 दिसम्बर तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस प्रशिक्षण में हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर के वन, कृषि, उद्यान, पशुपालन सहित विभिन्न विभागों के 24 अधिकारियों ने भाग लिया। इनके साथ स्थानीय निकायों के प्रतिनिधि, प्रगतिशील किसान और गैर-सरकारी संगठनों के सदस्य भी शामिल हुए। कार्यक्रम का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश वन विभाग के प्रधान मुख्य अरण्यपाल डाक्टर संजय सूद ने किया, जबकि सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर सस्टेनेबल लैंड डेवलपमेंट देहरादून के निदेशक डाक्टर राजेश शर्मा विशिष्ट अतिथि रहे। संस्थान की निदेशक डाक्टर मनीषा थपलियाल ने हिमालय के पारिस्थितिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व और जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न खतरों पर प्रकाश डाला। प्रशिक्षण समन्वयक डाक्टर आरके वर्मा ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न विभागों के विशेषज्ञों को एक मंच पर लाकर हिमालय क्षेत्र के संवेदनशील पारितंत्रों की सुरक्षा हेतु वैज्ञानिक, तकनीकी और नीतिगत उपायों की जानकारी प्रदान करना था। डाक्टर संजय सिंह ने भूमि क्षरण तटस्थता, डाक्टर विनीत जिष्टू ने हिमालय की जैव विविधता और डाक्टर एसएस रंधावा ने सुदूर संवेदन और जीआईएस की भूमिका पर विस्तृत व्याख्यान दिया। दिनेश पॉल वनमंडलाधिकारी पर्वतीय पारितंत्र की सुरक्षा के लिए नीतिगत ढांचे की जानकारी साझा की। दूसरे दिन प्रतिभागियों ने कृषि विज्ञान केंद्र, कंडाघाट एवं वानिकी व बागवानी विश्वविद्यालय, नौणी का भ्रमण कर कार्बन पृथक्करण, संसाधन प्रबंधन और जलवायु प्रतिरोधी कृषि-वानिकी प्रणालियों से संबंधित व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त किया। अंतिम दिन डाक्टर लाल सिंह, डाक्टर पंकज पंवार और संजीव सूद ने अपने अनुभव साझा किए।

दिव्य हिमाचल

शिमला में जलवायु प्रतिरोधी रणनीतियों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला में तीन दिनों तक जलवायु प्रतिरोधी रणनीतियों और उपायों के माध्यम से हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश और केंद्र शासित प्रदेश जम्मू व कश्मीर के विभिन्न विभागों जैसे वन विभाग, कृषि विभाग, उद्यान विभाग, पशु पालन विभाग से कुल 24 अधिकारियों, स्थानीय निकायों के प्रतिनिधियों, प्रगतिशील किसानों और गैर सरकारी संगठनों के सदस्यों ने हिस्सा लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश वन विभाग के प्रधान मुख्य अरण्यपाल वन बल प्रमुख डॉ. संजय सूद मुख्यअतिथि थे। सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर सस्टेनेबल लैंड डेवेलपमेंट देहरादून के निदेशक डॉ. राजेश शर्मा बतौर विशेष अतिथि सम्मिलित हुए। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की निदेशक डॉ. मनीषा थपलियाल ने स्वागत भाषण में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि संस्थान में तीन दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर सस्टेनेबल लैंड डेवेलपमेंट देहरादून के सहयोग से किया गया। अपने संबोधन में उन्होंने हिमालय पारितंत्र की पारिस्थितिकीय, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डाला और जलवायु परिवर्तन के कारण से इसके संवेदनशील वातावरण को होने वाले खतरों को उजागर किया।

हिमाचल दस्तक

पानी का बहाव रोकने से रुकेगा मिट्टी का कटाव : डा. पंकज

देश में हर वर्ष होता है 16 टन प्रति हैक्टेयर मिट्टी का कटाव, मिट्टी कटाव से घटती है उर्वरक क्षमता, जलवायु परिवर्तन के कारण हो रहा अधिक मिट्टी का कटाव

शिमला : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान में आयोजित प्रशिक्षण शिविर में जानकारी लेते हुए प्रतिभागी। (नरेश)

शिमला, 12 दिसम्बर (भूपिन्द्र): हिमाचल सहित पूरे देश में मिट्टी का कटाव सबसे बड़ी समस्या है। जलवायु परिवर्तन के कारण ही मिट्टी का कटाव हो रहा है। देश में हर वर्ष 16 टन प्रति हैक्टेयर मिट्टी का कटाव होता है। यानी 16 टन प्रति हैक्टेयर प्रति वर्ष मिट्टी बह जाती है। मिट्टी कटाव से उर्वरक क्षमता भी कम होती है। ऐसे में मिट्टी का कटाव रोकना सबसे बड़ी चुनौती है और पानी का बहाव रोकने से ही मिट्टी के कटाव को रोका जा सकता है।

यह बात मृदा व जल संरक्षण संस्थान चंडीगढ़ के प्रमुख वैज्ञानिक डा. पंकज पंवार ने शुक्रवार को हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी में जलवायु प्रतिरोधी रणनीतियों और उपायों के माध्यम से हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा विषय पर आयोजित 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर आयोजित तकनीकी सत्र में कही। उन्होंने कहा कि सृष्टि को चलाने के लिए पवन, पानी और धरती बहुत ही जरूरी हैं, लेकिन हम इन्हें भूल गए हैं तथा हमने इन्हें प्रदूषित कर दिया है। यदि हम इन्हें बचाएंगे तो यह अगली पीढ़ी के लिए भी बची रहेगी।

उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण मिट्टी का कटाव हो रहा है। इसे यांत्रिक व वानस्पतिक उपायों से रोका जा सकता है। एक अनुमान के अनुसार देश में 68 फीसदी मिट्टी का कटाव पानी के कारण होता है। ऐसे में मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए पानी को रोकना होगा।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम दिवस पर विभिन्न विषय विशेषज्ञों हिमालयन रिसर्च ग्रुप शिमला के निदेशक डा. लाल सिंह व समन्वित विकास परियोजना सोलन के वरिष्ठ अधिकारी संजीव सूद ने हिमालय से जुड़े पारिस्थितिक, मृदा व जल संरक्षण, जल अधिग्रहण क्षेत्रों के विकास व संरक्षण तथा सतत आजीविका के लिए पर्यावरणीय अनुकूलित विधियों के बारे में अपने विचार व अनुभव सांझा किए।

साइबर फ्रॉड के प्रति किया जागरूक

कुमारसैन, 12 दिसम्बर (सोनी): हिमाचल प्रदेश राज्य सहकारी बैंक प्रेमनगर शाखा द्वारा नाबार्ड के सौजन्य से शुक्रवार को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला मलैंडी में वित्तीय साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में स्कूल के विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं अभिभावकों को बैंक सुविधाओं से जोड़ने, बचत, सावधि जमा, ऋण योजनाओं तथा साइबर सिक्योरिटी के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। शाखा के एग्जीक्यूटिव असिस्टैंट प्रताप चंद ने विशेष रूप से बैंक की सपनों का संचय स्कीम पर प्रकाश डाला, जिसमें जन्म दिवस पर जमा राशि को सावधि जमा में परिवर्तित किया जाता है। 18 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर यह राशि 5 गुना एजुकेशन या बिजनैस लोन सुविधा के पात्र बन जाते हैं। उन्होंने कहा कि यह स्कीम बच्चों के भविष्य निर्माण में मील का पत्थर साबित हो रही है। इसके अलावा वर्तमान साइबर फ्रॉड के खतरे, ए.पी.के. एप्स, अननोन नंबरों से आने वाले बधाई संदेशों तथा प्रलोभनपूर्ण लिंक्स से बचाव की जानकारी प्रदान की गई।

पंजाब केसरी